रचनाकारों के पते -

- **जगदीश सौरभ-** सहायक प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग, झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय, राँची, झारखंड। ईमेल- jagdish.saurabh@gmail.com

- **दिनेश सागर-** दिनेश सागर, कक्ष क्र. - 127, बिरला - 'ब' हॉस्टल, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी (उ.प्र.)। ईमेल- dineshsagarbhu19@gmail.com

- **रमेश गोहे-** सहायक प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़। ईमेल- rameshggvhindi@gmail.com

- **डॉ. सुनील कुमार 'सुमन'-** सहायक प्रोफ़ेसर, हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र । ईमेल – drsunilsuman@gmail.com

- **इन्दु बारौठ (चारण)-** लंदन में संस्कृत, हिन्दी के रुप मे अनुवादिका के रुप में कार्यरत । कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में हिन्दी, संस्कृत परीक्षा मूल्यांकन विशेषज्ञ । ईमेल - indu.barot@yahoo.in

- **जगदीश पंकज-** कहानीकार व कवि, सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया में वरिष्ठ प्रबन्धक के पद से सेवानिवृत्त एवं स्वतंत्र लेखन, सोमसदन, 5/41 सेक्टर 2, राजेन्द्र नगर, साहिबाबाद, गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश । ईमेल- jagdishjend@gmail.com

- **पायल चतुर्वेदी-** छात्रा, बीए षष्ठ सेमेस्टर, हिन्दी विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़ ।

- **हरिकेश गौतम-** सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, आर. एम. पी. जी. कॉलेज, सीतापुर उत्तर प्रदेश। ईमेल- harikesh.au139@gmail.com

- **अनिष कुमार सिंह-** शोध अध्येता, वानिकी विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.) ।

- **ओम सुनील पंडा-** छात्र, बीए चतुर्थ सेमेस्टर, हिन्दी विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़ ।

- **मोहन कुमार-** शोधार्थी, हिन्दी विभाग, काशी हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी । ईमेल- mohankr301@bhu.ac.in

- **डॉ. निकिता जैन-** असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, डॉ. बी. आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय दिल्ली । ईमेल- nkjn989@gmail.com

- **रजनी प्रभा-** शोधार्थी, हिन्दी, द्वारा- कमलेश कुमार सिंह ग्राम-जारंगडीह, कौशल्या स्थान, पो0- ड्योढ, मुजफ्फरपुर। ईमेल- rajni.prabha22@gmail.com

- **संजय कुमार पटेल-** पी-एच. डी., शोध छात्र, हिन्दी विभाग, के.बी.पी.जी. कॉलेज, मिर्जापुर, संबद्ध महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी। ईमेल- incrediblesanjayau@gmail.com

- **डॉ. जया द्विवेदी-** एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, के.बी.पी.जी. कॉलेज, मिर्जापुर, संबद्ध महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी।

- **डॉ. अनिल कुमार-** असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, स्वामी श्रद्धानंद कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली। ईमेल- dranilkumar036@gmail.com

- **डॉ. गौरी त्रिपाठी-** एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, गुरु घासीदास केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़। ईमेल- tripathigauri07@gmail.com

- **मुरली मनोहर सिंह-** सहायक प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़। ईमेल- muralibhuhindi@gmail.com

- **संगीता-** शोधार्थी, पी-एच.डी., हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली । ईमेल - sangeetathaku369@gmail.com

- **हरिशंकर परसाई-** हिन्दी के वरिष्ठ, कथाकार, निबंधकार व व्यंग्यकार थे ।

- **ललित श्रीमाली-** 38 A, लेन-1, विनायक नगर, रामगिरि, बडगाँव, उदयपुर, राजस्थान। ईमेल- drlalitkumarshrimali@gmail.com

- **मुक्तेश्वर मुकेश-** कहानीकार, संपादक व समीक्षक, सृजन गृह, शिवपुरी, वार्ड संख्या- 13, सहरसा। ईमेल- kvikramwriter@gmail.com

विनम्र आग्रह -

1. कविता, कहानी, लघुकथा, उपन्यास अंश सहित सभी साहित्यिक विधाओं की रचनाएं स्वीकार की जाएंगी।
2. एक रचनाकार एक बार में चार से अधिक कवितायें न भेजें।
3. नए विषयों पर आलोचनात्मक लेख, शोध-आलेख व नई पुस्तकों की समीक्षा स्वीकार की जाएंगी। समीक्षकीय पुस्तकों का चयन पत्रिका द्वारा किया जाएगा।
4. लेख व आलोचनात्मक लेख नए विषयों पर एकाग्र हों। उसकी स्थापनाएं स्पष्ट हों। उनमें बेवजह संदर्भों की उबासी न हो।
5. रचनाएँ भेजते समय फोटो के साथ अपना संक्षिप्त परिचय अवश्य दें।
6. पुस्तक समीक्षा भेजते समय समीक्षित पुस्तक व लेखक का भी पूरा परिचय अवश्य भेजें। समीक्षकीय पुस्तक छः महीना से अधिक पुरानी न हो।
7. मौलिक रचनाएं ही स्वीकृत होंगी। मौलिकता के लिए एक संक्षिप्त घोषणा-पत्र देना होगा।
8. शोध-पत्र के लिए संदर्भ साँचा (उद्धरण) ए.पी.ए. शैली में स्वीकृत है। पाठ के अंदर पादटिप्पणी अवश्य दें।
9. रचनाएँ सिर्फ हिन्दी भाषा (देवनागरी लिपि) में और यूनिकोड (कोकिला या मंगल) फॉन्ट में टाइप की हुई ही स्वीकृत होंगी।
10. लेखकों से अनुरोध रहेगा कि अपने लिखे से पूरी तरह संतुष्ट हो जाने के बाद ही प्रकाशन के लिए भेजें। गुणवत्ता और मौलिकता का जरूर ध्यान रखें। हम बेहद सम्मान के साथ आपको प्रकाशित करेंगे।
11. रचनाएँ प्रकाशित करने का अंतिम अधिकार संपादक मण्डल के पास सुरक्षित है। अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए हमें ईमेल (swanimhindiggv@gmail.com) करें। पत्रिका का प्रत्येक अंक ऑनलाइन माध्यम से पीडीएफ़ में गुरु घासीदास विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर उपलब्ध रहेगा।

विभागीय गतिविधियां

मन करता है कि समुंदर बन जाऊं मैं: प्रो. चक्रवाल

बिलासपुर। गुरु घासीदास केंद्रीय विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के साप्ताहिक साहित्यिक कार्यक्रम साहित्य वार्ता की कड़ी में विश्वविद्यालय के कुलपति और कवि प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल ने कविता पाठ किया। उनकी कविताएं जीवन के अनुभवों से जुड़ी हुई हैं। उन्होंने प्रेम की अभिव्यक्ति से कविता की शुरुआत करते हुए जीवन की बन जाऊं। समुद्र की गहराई, समुद्र की शांति। उसी प्रकार की शांति हमें जीवन में आवश्यक होती है।

प्रो. चक्रवाल कविता के माध्यम से जीवन के संत्रास को शांत करने की अपील करते हैं। उनकी कविताओं में आत्मीय आग्रह है और प्रेम भी है, नदी भी है, झरने भी हैं और इसी निसर्ग के बीच एक धब्बे की तरह यथार्थ। मानवता को झकझोरती व शर्मसार

सेंट्रल यूनिवर्सिटी : साहित्य वार्ता में कुलपति ने किया कविता पाठ

मन करता है कि समुंदर बन जाऊं मैं : प्रो. चक्रवाल

बिलासपुर @ पत्रिका. हिन्दी विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर के साप्ताहिक साहित्यिक कार्यक्रम साहित्य वार्ता की इस कड़ी में शुक्रवार को विश्वविद्यालय के कुलपति और कवि प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल का कविता पाठ हुआ।

सोशल कनेक्ट समाज सेतु

साहित्य वार्ता में प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल ने अपनी कविताओं का पाठ किया। उनकी कविताएँ जीवन के अनुभवों से जुड़ी हुई हैं। उन्होंने प्रेम की अभिव्यक्ति से कविता की शुरुआत करते हुए, जीवन की त्रासदी पर ले जाकर खत्म किया। जीवन का विस्तार समुद्र में करते हुए, उन्होंने कामना की कि क्यों न समुद्र बन

साहित्य वार्ता

हिंदी विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय

छायावादी कवियों की जीवनदृष्टि पर वक्ताओं ने रखे विचार

सीयू में पुनश्चर्या कार्यक्रम

लोकस्वर मीडिया नेटवर्क

lokswar.in

बिलासपुर। छायावाद के सौ साल बीत चुके हैं। तब से लेकर आज का समय, साहित्य, संदर्भ व पाठक भी बदल चुके हैं। फिर भी आज तक छायावाद का महत्व जस का तस बना हुआ है। इस लेकर गुरु घासीदास केंद्रीय विश्वविद्यालय के एचआरडीसी के तत्वावधान में हिन्दी पुनश्चर्या पाठ्यक्रम का विषय 'छायावादी कवियों की जीवन दृष्टि' पर 11 से कार्यक्रम का आयोजन हो रहा है। जिसमें विभिन्न विद्वानों अपने विचार रखे। कार्यक्रम के प्रथम वक्ता डॉ.अवधेश प्रधान ने छायावाद की पृष्ठभूमि में पिछली सदी के नवजागरण की सामाजिक,सांस्कृतिक चेतना को महत्वपूर्ण माना। निराला, पंत और प्रसाद की कविताओं का हवाला देते हुए डॉ. प्रधान ने बताया कि किस तरह छायावाद ने हिंदी वर्चस्व को खत्म करके हिंदी की काव्यभाषा का अखिल भारतीय स्वरूप निर्मित किया। जिसमें उपनिवेशिक सत्ता का विशाल प्रतिरोध और राष्ट्रीय मुक्ति का स्वप्न तैर रहा था। उन्होंने हिंदी काव्यधारा के भीतर एक आधुनिक और नई स्त्री चरित्रों की उपस्थिति की छवियों को भी प्रदर्शित किया। इसी कड़ी में हिंदी में दलित लेखन के आलोचक डॉ.बजरंग बिहारी तिवारी ने आलोचकों द्वारा किए गए छायावाद के विभाजन को ही अपर्याप्त बताया। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय,हिंदी विभाग के आलोचक प्रो.मनोज सिंह ने छायावाद के प्रारम्भ होने, फिर उसके नामकरण, उसके काव्य वैविध्य को विस्तार प्रस्तुत किया। इस अवसर पर उन्होंने महादेवी वर्मा की कविताओं में निजता की प्रबल अभिव्यक्ति को स्पष्ट करते हुए महादेवी के कुछ ऐसे गीतों को

कथा यूनाइटेड किंग्डम के संस्थापक ने प्रवासी साहित्य की अवधारणा पर रखे विचार

अनुभव और स्मृतियों का संसार पीछे छोड़ आए हैं आज के लेखक: शर्मा

लोकस्वर मीडिया नेटवर्क

lokswar.in

बिलासपुर। आज के साहित्य, विशेषकर कविता में गांव को लेकर जो नास्टेल्जिया दिखाई देता है। उसका कारण ही है कि आज का कवि या कोई लेखक, कथाकार अपनी उन जड़ों को खो चुका है, जहां उसका बचपन बीता है, जहां से उसके जीवन का अनुभव और स्मृतियों का एक भरा-पूरा संसार समृद्ध हुआ है। लेखक उसे पीछे छोड़ आया है।

ये बातें विश्व हिंदी दिवस पर गुरु घासीदास विश्वविद्यालय में आयोजित संगोष्ठी में लंदन की साहित्यिक संस्था कथा यूनाइटेड किंग्डम के संस्थापक और हिंदी के वरिष्ठ कथाकार तेजेंद्र शर्मा ने हिंदी में प्रवासी साहित्य की अवधारणा पर खेद जताते हुए कहीं। उन्होंने कहा कि दूरस्थ बिहार, छत्तीसगढ़ या पंजाब का कोई लेखक जब दिल्ली में रहकर अपने गांव की कहानी लिखता है तो वह भी किसी न किसी स्तर पर प्रवासी ही होता है।

कथाकार शर्मा ने लंदन में फैलते जा रहे हिंदी कथा साहित्य की लोकप्रियता का हवाला देते हुए बताया कि 1998 तक वहां के किसी लेखक के पास अपनी कहानियों का एक संग्रह तक नहीं था, जबकि विगत बीस वर्षों में आज कोई ऐसा लेखक लंदन में नहीं है, जिसके दो- तीन कथा संग्रह न प्रकाशित हो चुके हैं। इसके पीछे 'कथा यू के' की साहित्यिक गोष्ठियां, उसके प्रयास महत्वपूर्ण रहे हैं।

अनुभव से उठाएं साहित्य के विषय

शर्मा ने कहा कि साहित्य में स्त्री विमर्श, दलित विमर्श या आदिवासी विमर्श जैसे बंटवारे साहित्य के प्रभाव को सीमित कर रहे हैं। आज के लेखक को चाहिए कि साहित्य के बाजार में उछाले जा रहे इन कृत्रिम मुद्दों के बरक्स अपने जीवन अनुभव से साहित्य के विषय उठाए। इसके बाद उन्होंने अपने लेखन के प्रेरणा स्रोत जगदंबा प्रसाद दीक्षित का स्मरण करते हुए उनके योगदान को बताया। कला विद्यापीठ के छात्रों और अन्य विभाग के अध्यापकों की उपस्थिति में संगोष्ठी का संचालन हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो. देवेंद्र नाथ सिंह व धन्यवाद ज्ञापन विभाग के असिस्टेंट प्रो. मुरली मनोहर सिंह ने किया।

साहित्य : कुछ पते कुछ चिट्ठियां

हिन्दी विभाग

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय

(केंद्रीय विश्वविद्यालय)

कोनी, बिलासपुर, (छ.ग.), भारत, पिनकोड - 495001